रिकार्डः-यह वक्त जा रहा है:- ** ओमशान्ति प्रातःक्लास 29-12-67

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों प्रति कहते हैं मीठे2 बच्चों। जैसे लौकिक बाप को बच्चे प्यारे लगते हैं वैसे बेहद के बाप को भी बेहद के बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं। बाप बच्चों को शिक्षा समझानी देते हैं कि कहां ऊंच पद पाओ। यह बाप की चाहना रहती है। तो बेहद के बाप को भी यह अच्छी रहती है, बच्चों को ज्ञान से श्रृंगारते हैं। तुमको दोनो बाप बहुत अच्छी रीत श्रृंगारते हैं कि बच्चे ऊंच पद पाये। लौकिक बाप भी खुश तो पारलौकिक बाप भी खुश होते हैं। जो अच्छी रीत पुरुषार्थ करते हैं उन्हों को देख कर बाप खुश होते हैं। गाया भी जाता है फालो फादर। तो दोनो को फालो करना पड़े। एक है रूहानी बाप। दूसरा फिर यह फादर। तो पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। तुम जब भठी में थे तो सब का ताज सहित फोटो निकला था। बाप ने यह तो समझाया है लाईट का ताज कोई होता नहीं। एक निशानी है प्युरिटी की। सभी को देते हैं। ऐसे नहीं कोई सफेद लाईट का ताज होता है। यह पवित्रता की निशानी समझाई जाती है। पहले2 तुम पवित्र रहते हो। सतयुग आद में तुम ही थे ना। बाप भी कहते हैं आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम बच्चे ही पहले आते हो। फिर पहले ही जाना है। बाप बच्चों को श्रृंगारते हैं। पियर घर में बनवा में रहते हो। इस समय तुमको भी साधारण रहना है। न ऊंच न नीच। बाप भी कहते हैं मै साधारण तन में प्रवेश करता हूं। कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कह सकते। मनुष्य मनुष्य की सदगति कर न सके। सदगति तो सत गुरु ही करते हैं। मनुष्य 60 वर्ष के बाद वानप्रस्थ लेते हैं। फिर गुरु करते हैं। यह भी रसम अभी की है जो फिर भक्ति मार्ग में चली आती है। आजकल तो छोटे बच्चे को भी गुरु करा देते हैं। भल वानप्रस्थ अवस्था नहीं है परन्तु अचानक मौत तो आ जाता है ना। इसलिए बच्चों को भी गुरु करा देते हैं। जैसे बाप कहते हैं तुम सभी आत्माओं का हक्क है वर्सा पाने का। वह कह देते हैं गुरु बिगर ठौर न पावेंगे अर्थात ब्रह्म में लीन नहीं होंगे। तुमको तो लीन नहीं होना है। तुम आत्माएं ब्रहमाण्ड में निवास करती हो। बाप समझाते हैं आत्माएं कोई अण्डे मिशल नहीं हैं। यह भक्ति मार्ग के अक्षर हैं। आत्मा तो स्टार बिन्दी है। बाप भी बिन्दी ही है। उस बिन्दी को हो ज्ञान का सागर कहा जाता है। तुम भी छोटी आत्मा हो उन में सारा ज्ञान भरा हुआ है। तुम फील करते हो। पास विध ऑनर तो होना ही है। ऐसे नहीं कि शिव लिंग कोई बड़ा है। जितना आत्मा है उतना ही परमात्मा है। उसको कहा जाता है परमधाम में रहने वाली आत्मा। जहां से फिर आते हैं पार्ट बजाने। बाप कहते हैं मैं भी आता हूं परन्तु मुझे अपना शरीर नहीं है। मैं रूप भी हूं बसंत भी हूं। आत्मा रूप है उसमें सारा ज्ञान है। वर्षा बरसाते हैं। सभी मनुष्य पापात्मा से पुण्यात्मा बन जाते हैं। बाप गति सदगति दोनो देते हैं। तुम सदगति में जाते हो तो बाकी सब गति में जाते हैं। अर्थात अपने घर। वह है स्वीट होम। आत्मा ही इन कानों द्वारा सुनती है, सब कुछ करती है। अब बाप कहते हैं मीठे2 सिकी-लधे बच्चे बच्चों वापस जाना है इसके लिए पवित्र जरूर बनना है। पवित्र आत्मा बिगर कोई भी वापस जा नहीं सकते। मैं सभी को ले जाने आया हूं। आत्माओं को शिव की बारात कहते हैं। अब शिव बाबा शिवालय की स्थापना कर रहे हैं। फिर रावण आकर वेश्यालय स्थापन करती है। वाममार्ग को वेश्यालय कहा जाता है। बाबा के पास बहुत बच्चे हैं जो शादी कर भी पवित्र रहते हैं। सन्यासी तो कहते हैं यह हो नहीं सकता। जो दोनो इकट्ठे रह सके। यहां समझाया जाता है इस में आमदनी बहुत है। पवित्र रहने से 21 जन्मों की राजधानी मिलती है। तो एक जन्म पवित्र रहना कोई बड़ी बात नहीं। बाप कहते हैं तुम काम चिता पर बैठ बिलकुल ही काले बन गये हो। कृष्ण के लिए भी कहते हैं सांवरा और गोरा। यह समझानी है इस समय की तुम्हारे लिए। बाकी कृष्ण को कोई सर्प ने डंसा नहीं था। सर्प तो इस समय की है एक दो को डंसते हैं। काम चिता पर बैठने से सांवरा बन गया। फिर उनको गांव का छोरा भी कहा जाता है। बरोबर था ना। कृष्ण तो हो न सके। इनके ही बहुत जन्मों के अंत में बाप प्रवेश कर गोराबनाते हैं। बाप ने समझाया है ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। भक्ति में आधा कल्प भटकना

पड़ता है। अभी तुमको भटकने से छुड़ाया जाता है। बाप को ही याद करना है। बाबा आप कितना मीठा हो। कितना मीठा वर्सा आप देते हो। हमको मनुष्य से देवता मंदिर लायक बनाते हो। ऐसे ऐसे अपने से बातें करनी हैं। मुख से कुछ बोलना नहीं है। भक्ति मार्ग में हम आप माशुक को कितना याद करते आये हैं। अभी आप आये मिले हो। बाबा आप तो सब से मीठे हो। आप को हम क्यों नहीं याद करेंगे। आप को प्रेम का, शांति का सागर कहा जाता है। आप ही आकर वर्सा देते हो। बाकी प्रेरणा से कुछ भी मिलता नहीं है। बाप तो सम्मुख आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है ना। बाप कहते हैं मैं तुमको राजाओं का भी राजा बनाता हूं। यह राजयोग है। अभी तुम मूलवतन सूक्ष्म वतन स्थूल वतन को जान गये हो। इतनी छोटी आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। है भी बना बनाया... इनको कहा जाता है अनादी अविनाशी ड्रामा। ड्रामा फिरता रहता है। इन में संशय की कोई बात ही नहीं। बाप सृष्टि के आदि मध्य अंत का राज़ समझाते हैं। तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो। तुम्हारी बुधि में सारा चक्र फिरता रहता है। तो उस से तुम्हारे पाप कटते हैं। बाकी कृष्ण ने कोई स्वदर्शन चक्रधारी नहीं था न कोई हिंसा ही किया। वहां तो न लड़ाई की हिंसा न काम कटारी की हिंसा चलती। डबल अहिंसक होते हैं। बाकी और कोई युध की बात ही नहीं। अब बाप ऊंच ते ऊंच फिर ऊंच ते ऊंच यह (ल० ना०) वर्सा। इन जैसा ऊंच बनना है। जितना तुम पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। कल्प2 वही तुम्हारी पढ़ाई रहेगी। अभी अच्छा पुरुषार्थ किया तो कल्प2 करते रहेंगे। जिसमानी पढ़ाई से इतना ऊंच पद नहीं मिल सकता है। ऊंच ते ऊंच है यह ल० ना०। यह भी मनुष्य हैं परन्तु दैवीगुण धारण करते हैं इसलिए देवता कहा जाता है। बाकी 8-10 भुजा वाला कोई है नहीं। यह तो भक्ति मार्ग के खिलोने बनाई हैं। देवियों की कितनी पूजा करते हैं। उन्हों को रचते, पालना करते फिर डूबो देते हैं। इसको कहा जाता है गुडियों का खेल। बाप कहते हैं कितने बेसमझ बन पड़े हो। भक्ति में बहुत रोते हैं प्यार में आकर आंसु बहाते हैं। यहां तो बाप कहते हैं आंसु आया तो फेल। अम्मा मरे तो भी हलवा खांवा....(मिसाल) आजकल तो बम्बई में भी कोई बिमार पड़ते हैं वा मरते हैं तो ब्रहमा कुमारियों को बुलाते हैं कि आकर शान्ति दो। तुम समझाते हो आत्मा ने तो एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। इसमें तुम्हारा क्या जाता है। रोने से क्या फायदा। कहते हैं इनको काल खा गया। ऐसी कोई चीज़ है नहीं। यह तो आत्मा आपे ही एक शरीर छोड़ जाती है। अपने समय पर शरीर छोड़ भागती है। बाकी काल कोई चीज़ नहीं है। आत्मा कहती है मैं एक शरीर छोड़ जाये दूसरा लेती हूं। वहां तो गर्भ महल होता है। सज़ा की बात ही नहीं। वहां तुम्हारे कर्म अकर्म हो जाते हैं। माया ही नहीं जो विकर्म हो। तुम विकर्माजीत बनते हो। पहले2 विकर्माजीत सम्वत चलता है। फिर भक्ति मार्ग शुरु होता है तो राजा विकर्म सम्वत शुरु होता है। इस समय जो विकर्म किये हैं उन पर जीत पाते हो तो नाम रखा जाता है विकर्माजीत। फिर द्वापर से विकर्म राजा हो जाता, विकर्म करते रहते हैं। सुई पर अगर कट चढ़ी हुई होगी तो चकमक खेंचेगें नहीं। जितना पापों की जंक उतरती जावेगी तो चकमक खेंचेगी। बाप तो पूरा प्युर है। तुमको भी प्युर बनना है। जैसे लौकिक बाप भी बच्चों को देख खुश होता है ना। बेहद के बाप भी खुश होता है बच्चों के सर्विस पर। बच्चे लिखते हैं बाबा दीदी को एक दिन लिए भेज दो। बाप कहते हैं क्यों नहीं। आने-जाने में देरी थोड़े ही लगती है। बच्चे बहुत मेहनत भी कर रहे हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस एबुल बच्चों को ही बुलाते हैं। तो एक दो दिन के लिए भेज देते हैं। सर्विस पर तो हमेशा एवर रेडी रहना है। तुम बच्चे हो पतितों को पावन बनाने वाले ईश्वरीय मिशन। अभी तुम ईश्वरीय सन्तान हो। बेहद का बाप है और तुम सब बहिन भाई हो। बस। और कोई सम्बन्ध नहीं है। मुक्ति धाम में है ही बाप और तुम सब आत्मायें भाई2, फिर तुम सतयुग में जाते हो तो वहां एक बच्चा और एक बच्ची। बस। यहां तो बहुत सम्बन्ध होते हैं।

चाचा, काका, आद आद। वह तो है ही स्वीट होम। मुक्तिधाम। इसके लिए मनुष्य कितना यज्ञ तप आद करते हैं परन्तु वापस तो कोई जा नहीं सकते। गपोड़े बहुत मारते रहते हैं। सर्व का सदगति दाता एक ही है। दूसरा न कोई। अभी तुम हो संगम युग पर। यहां है ढेर मनुष्य। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। स्थापना फिर विनाश होना है। अभी अनेक धर्म होने कारण कितना हंगामा हैं। तुम 100% सालवेन्ट थे फिर 84 जन्म बाद 100% इनसालवेन्ट बन पड़ते हो। सब से जास्ती अजामिल, अहिल्यायें× कौन बनी है जो पहले2 मिले थे। पहले सालवेन्ट फिर इनसालवेन्ट बने हैं। अब बाप आकर सब को जगाते हैं। अब जागो सतयुग आ रहा है। अब सत्य बाप ही तुमको ×2। जन्मों का वर्सा देते है। भारत ही सच्च खण्ड बनता है। बाप सच्चा खण्ड बनाते है फिर झूठ खण्ड कौन बनाती है। 5विकारों रूपी रावण। रावण का कितना बड़ा बूत बनाते हैं। उसको जलाते हैं। क्योंकि यह है नम्बरवन दुश्मन। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि कब से रावण राज्य हुआ है। बाप समझाते है आधा कल्प है रामराज्य। आधा कल्प है रावण राज्य। बाकी रावण कोई मनुष्य नहीं है जिसको मारना है। यह सब भक्ति मार्ग अन्धश्रधा की बाते है। रावण को मारा फिर बन्दर सैना ली, पूल बांधी कितनी बातें बना दी हैं। यह नहीं समझते है कि सारा भारत ही लंका है। यह तो बड़े ते बड़ा आईलेंड ठहरा। इन पर रावण राज्य है। बाप आकर रामराज्य स्थापन करते हैं। फिर जयजय कार हो जाती है। वहां सदेव ही खुशी रहती है। वह है ही सुखधाम। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग। बाप कहते है इस पुरुषार्थ से तुम यह बनने वाले हो। तुम्हारे चित्र भी बनाये थे। बहुत आये फिर सनन्ती कथन्ती, सुनावन्ती भाग ती हो गये। बाप कल्प 2 आकर बच्चों को बहुत ही प्यार से समझाते हैं। बाप, टीचर प्यार करते हैं। सदगुरु भी प्यार करते हैं। सदगुरु का निन्दक ठौर न पाये। तुम्हारी एमआबजेक्ट सामने खड़ी है। उन गुरुओं पास तो कोई एमआबजेक्ट होती नहीं। यह कोई पढ़ाई नहीं है। यह तो पढ़ाई है। इसको कहा जाता है युनिवर्सिटी कम हास्पिटल। जिससे तुम एवर हेल्दी बनते हो। वहां तो है ही झूठ। गाते भी हैं झूठी माया, झूठी काया झूठा सब संसार। सतयुग है ही सच खण्ड। वहां तेरे हीरे जवाहरों के महल होते हैं। सोमनाथ का मंदिर भी भक्ति मार्ग में बनाया है। कितना धन था। जो फिर मुसलमान ने आकर लूटा। बड़े2 मस्जिदें बनाई। बाप तुमको कारुन का खज़ाना देते हैं। शुरु में ही सब तुमको सा0 कराते आये हैं। अल्ला अवलदीन बाबा हैं ना। पहला2 धर्म स्थापन करते हैं। वह हैं डिटीज्म। जो धर्म नहीं है वह फिर से स्थापन होता है। सभी जानते हैं प्राचीन सतयुग में इन्हों का ही राज्य था। उनके उपर कोई नहीं। डिटी राज्य को ही पैराडाईज कहा जाता है। अभी तुम जानते हो फिर औरों को बताना है। सब को कैसे पता पड़े। जो फिर ऐसा उलहना न दे कि हमको पता नहीं पड़ा। तुम तो सब को बतलाते हो। फिर भी बाप को छोड़ कर चले जाते हो। यह हिस्ट्री रपीट रिपीट। बाबा के पास आते है तो बाबा पूछते हैं आगे कब मिले थे। कहते हैं हां बाबा 5000 वर्ष पहले हम मिलने आये थे। बेहद का वर्सा लेने आये थे। कोई आकर सुनते हैं, कोई को सा0 होता है। ब्रह्मा का तो ही याद आता है। फिर कहते है हम ने तो यही रुप देखा था। बाप भी बच्चों को देख खुश होते हैं। तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली तो भरते हैं ना। वह लोग फिर शंकर के आगे जाकर कहते हैं झोली भर दो। अब सूक्ष्म वतन में यह सब बातें थोड़े ही होती हैं। बैल पर सवारी तो होती ही नहीं। सूक्ष्मवतन में कोई चीज़ होती नहीं। यह सब तुम सा0 करते हो। बाकी आत्मा कोई निकल कर जाती नहीं है। यह सब है सा0। ड्रामा में सा0 होने का भी सब नूंध है। वह रिपीट होती रहती है। नवधा भक्ति करते है फिर सा0 होता है। हनुमान आद ऐसा है थोड़े ही। यह सब सा0 होता है। यहां तो बहुतों को सा0 होती है। साक्षात्कार में भी बड़ी सम्भाल चाहिए। बहुत लिखते हैं हमारे पास मामा की पधारामणी होती है। इसमें बड़ी खबरदारी चाहिए। कोई तो लिखते हैं मामा हमारे पास बैठी ही है। मैं लिख देता हूं भूत बैठा है। न कि मामा। वह कहे नहीं। मामा हमको रात-दिन पढ़ाती है। बस आप का हमको प्रवाह नहीं है। बाबा साफ लिख देते हैं

यह भूत हैं। फिर मुरली बन्द कर देता हूं। फिर लिखते हैं बाबा अब तो माया चलीगई।.. तो यह सब माया की प्रवेशता होती है। फिर तरस भी पड़ता है। यह पढ़ाई है। सात दिन का कोर्स लेकर फिर कहां भी रह कर मुरली के आधार पर चल सकते हैं। सात दिन में इतना समझ जावेंगे जो फिर मुरली से समझ जावेंगे। तो बाप सब राज, समझाते रहते हैं। बाप तो बच्चों को अच्छी रीत पढ़ा कर सिखला कर उंच चढ़ाते हैं। वानप्रस्त अवस्था हुई फिर गुरु पास चले जाते हैं। फिर कुटुम्ब में नहीं आना होता है। फिर समझते है गुरु हमको भगवान पास ले जावेंगे। ऐसा उनको निश्चय दिलाते है। यह तो बाप भी है, सच्चा सदगुरु भी है। वह गुरुलोग तो ढेर के ढेर हैं। बनारस में पढ़ कर बहुत टाईटल लेते हैं। इसलिए बाबा ने कहा था बनारस में सेन्टर स्थापन कर दो। विद्युत मंडली को पकड़ो। बहुत झूठे टाईटल देते हैं। तुम बच्चों को बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता हैं। तुम लिखते हो 9 वर्ष में विश्व में शान्ति हो जावेंगी। सारे विश्व पर इन ल० ना० का राज्य होगा। एक राज्य, एक धर्म, एक भाषा होंगी। बाकी इतने सब धर्मों की भाषा कैसे होंगी। यह बाप की एक ही हट्टी हैं। आखिर सब जावेंगे कहां। सन्यासी भी आवेंगे। अभी अगर कोई आ जाये तो रीवलेशन हो जाये सब उन पर फट नेलत डालने लग पड़ेंगे। तुम बच्चों की विजय तो होनी ही हैं। इसलिए बाबा ने गीता का भगवान कौन वाला चित्र बनाया हैं। श्रीकृष्ण जो 84 जन्म लेने वाला हैं नई दुनिया का फर्स्ट प्रिन्स हैं। वह या पुनर्जन्म रहित शिव बाबा है गीता का भगवान। क्योंकि गीता ही मुख्य माई-बाप हैं। गीता माता कहते हैं ना। गीता सुनाने वाला पिता है शिव बाबा। मात-पिता गीता झूठी तो सब शास्त्र झूठे हो जाते हैं। झूठे शास्त्र पढ़ते2 दुर्गीत को पा लिया हैं। झाड़ आस्ते2 बड़ा होता जाता हैं। फिर तूफान लगता है तो फल गिर पड़ते हैं। तभी बाप समझाते हैं कि ऐसे मीठे बाप को कब फारकती नहीं देनी हैं। माया से खबरदार रहना हैं। चलते2 माया जोर से थप्पर मार देती हैं। गीत भी हैं ना छोटा सा दीवा को तूफान लगा। तुम छोटे दीवे हो। तुम्हारे में ज्ञान घृत पड़ रहा हैं। वहां ~~तुम्हारी आयु बहुत होने~~ से आयु भी बड़ी होनी हैं। तुम्हारे नई दृष्टि 5 तत्व भी नये होते हैं। सभी कुछ नया चाहिए ना। तुम सा० करते थे वहां फल कितने अच्छे अच्छे होते हैं। रस सूक्ष्मवतन में पीकर आते थे। वही आत्मा जो सतोप्रधान सो तमोप्रधान पुजारी बनी हैं। फिर पूज्य बनते हैं। पूज्य सो पुजारी, पावन सो पतित बनते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकी-लधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और ~~नमस्ते~~ नमस्ते।

* ~~xxx~~

****

-: *:- बरोदा में भेजी गई तार की कापी -: *:-

Express

SPIRITUAL GOD FATHERLY GOOD WISHES ON AUSPICIOUS OCCASION OF OPENING SPIRITUAL WORLD RENEWAL EXHIBITION FOR GUIDING HUMANITY TO THE ORIGINAL PATH OF SAHAJ RAJYOGA AND TRUE SPIRITUAL GODLY KNOWLEDGE FOR ACHIEVING GOD FATHERLY BIRTHRIGHT OF DEITY STATUS OF 100 % PURITY PEACE AND PROSPERITY WITH ONE LANGUAGE AND ONE RELIGION FOR 21 BIRTHS IN THE ENSUING SATYUGI SURYAVANSHI DOUBLE CROWNED DEITY WORLD SOVEREIGNTY LIKE 5000 YEARS AGO.

-- BAPLADA --